E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(4): 559-560
Received: 09-11-2020
Accepted: 17-12-2020

डॉ. नीरव अडालजा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डॉ. भीम राव अम्बेडकर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. नीरव अडालजा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डॉ. भीम राव अम्बेडकर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

जाति, भाषा और संस्कृति

डॉ. नीरव अडालजा

प्रस्तावना

भाषा और संस्कृति का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। भाषा विचार–विनिमय का साधन ही नहीं बल्कि वह हमें सोचना भी सिखाती है। हमारे सारे बुद्धि, वैभव, कला, साहित्य, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सरोकार भाषा से निर्मित हुए हैं। इसी के माध्यम से ज्ञान का भंडार अनादिकाल से संचित होकर हम तक पहुँचा है। भाषा संस्कृति की देन है और संस्कृति की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से होती है। हमारे भाव, विचार, अनुभूतियाँ, आशाएँ, आकांक्षाएँ, हर्ष–विषाद आदि भाषा के माध्यम से ही व्यक्त होते हैं। जनमानस भाषा में प्रतिबिंबित होता है। भाषा का सरलतम रूप मातृभाषा है। मातृभाषा को हम बिना प्रयास ही अर्जित कर लेते हैं। सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हम भाषा सीखते हैं। जहाँ एक ओर मातृभाषा हमारी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती है वहीं दूसरी ओर हमें आत्मिक आनंद भी देती है। इसीलिए एक ही भाषा के बोलने वालों में परस्पर आत्मीयता और स्नेह संबंध अधिक होता है। गाँधी जी ने मातृभाषा के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा– "मनुष्य के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही आवश्यक है जितना कि बच्चे के शारीरिक विकास के लिए माँ का दूध। बालक पहला पाठ अपनी माता से ही पढ़ता है। इसलिए उसके मानसिक विकास के लिए उसके ऊपर मातृभाषा के अतिरिक्त कोई दूसरी भाषा लादना मैं मातृभूमि के खिलाफ समझता हूँ।"[1]

आपस में बातचीत के आधार पर ही समाज का निर्माण होता है। भाषा के बिना किसी समाज का निर्माण संभव नहीं है। भाषा का निर्माण भी समाज में ही होता है और संस्कृति भी समाज विशेष में ही जन्म लेती है, पलती है और पनपती है। अतः समाज के बिना संस्कृति की सत्ता संभव नहीं है। इस प्रकार किसी संस्कृति के लिए समाज का होना अनिवार्य है तो समाज के लिए भाषा का होना भी अनिवार्य है। संस्कृति के बिना भाषा की भी सत्ता संभव नहीं है। इस प्रकार समाज, भाषा और संस्कृति एक–दूसरे पर निर्भर हैं। भाषा और संस्कृति दोनों साथ–साथ जन्म लेती हैं तथा साथ–साथ पनपती है। भाषा का अर्थ संस्कृति निर्धारित करती है। सामाजिक सरोकार भाषा के बिना संभव नहीं है। और भाषा भी सामाजिक सरोकारों के बिना संभव नहीं है। किसी भाषा का बोला जाना उस समाज की व्यवस्था, परंपरा और संस्कृति के नियमों पर निर्भर करता है। समाज और संस्कृति लुप्त होती है तो भाषा भी लुप्त होने लगती है। लैटिन, ग्रीक, संस्कृत जैसी प्राचीन महान भाषाएँ समाज से कटते ही सीमित हो गई और आज भी यह प्रक्रिया जारी है। दूसरों के राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रभुत्व में आकर बहुत सी बोलियाँ मृतप्राय हो चुकी हैं। कहा जाता है कि विश्व की छह हजार भाषाओं और बोलियों में से आधी लगभग सौ वर्षों में लुप्त हो जाएँगी और एक वक्त ऐसा भी आ सकता है कि जब तीन हजार की जगह सिर्फ तीन सौ ही बची रहें। इसका मुख्य कारण है कि जब दो संस्कृतियों का मिलन होता है तो एक भाषा दूसरी पर हावी हो जाती है। आर्यों से पहले की बहुत–सी भाषाओं का आज नामोनिशान नहीं रह गया है। स्वयं हमारे देश में आदिवासियों की भाषा के ऊपर संकट के बादल घिर आए हैं। भोटिया, भील, टोडा, संथाल आदि जातियाँ अपनी मातृभाषा की अपेक्षा दूसरी भाषाएँ बोलने के लिए बाध्य हैं।

संस्कृति : संस्कृति मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है। दया, ममता और परोपकार सीखता है। गीत–नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनंद लेने की योग्यता हासिल करता है। एक कहावत के अनुसार "सभ्यता वह चीज है जो हमारे पास है, लेकिन संस्कृति वह गुण है जो हममें छिपा हुआ है।"[2] सभ्यता मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी बाहरी तरक्की करता है और वह बाहर से दिखाई देती है। लेकिन संस्कृति इतने मोटे तौर पर दिखाई नहीं देती है। वह बहुत ही सूक्ष्म और महीन चीज है जो हमारी हर पसंद, हर आदत में छिपी रहती है। आदमी के अंदर छह विकार–काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर होते हैं। इन दुर्गुणों पर जो व्यक्ति जितना अधिक काबू पा लेता है उसकी संस्कृति भी उतनी ही ऊँची समझी जाती है। संस्कृति का स्वभाव कि वह आदान–प्रदान से विकसित होती है। जब दो देशों या जातियों के लोग आपस मिलते हैं तब दोनों की संस्कृतियाँ एक–दूसरे को प्रभावित करती हैं।

एक जाति का धार्मिक रिवाज दूसरी जाति अपना लेती है और उनकी आदतें एक–दूसरे में समा जाती हैं। प्रत्येक समाज की संस्कृति, उसकी कला, दर्शन व धर्म, शिक्षा व विज्ञान, फिल्मों व समाचार–पत्रों, रेडियो व टेलीविजन, सामाजिक रीति–रिवाज, राजनीतिक संस्थाओं और आर्थिक संगठनों के माध्यम से व्यक्त होती है। संस्कृति के माध्यम से ही हम किसी व्यक्ति विशेष व समाज के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करते हैं।

युग–युगांतरों से भारतीय संस्कृति का विकास धीरे–धीरे हुआ। भारतीय संस्कृति का जब–जब किसी विदेशी संस्कृति से मिलन हुआ तब–तब हमारी संस्कृति में नई ताजगी आई। कहते हैं कि इस देश में सबसे पहले नीग्रो जाति के लोग आए थे। वे मूलतः दक्षिण अफ्रीका के निवासी थे। पीपल की पूजा और धनुष–वाण का प्रयोग करना भारतीय संस्कृति को इनकी देन है। नीग्रो जाति के बाद आस्ट्रिक जाति के लोग आए। इनका मूल स्थान भू–मध्य सागर माना जाता है। कोर्क, मुण्डा, खासी, संथाली, निकोबारी आदि भाषाएँ इन्हीं की हैं। कपास, कदली, वाण, तांबूल, पिनाक, गंगा, लिंग, कंबल आदि अनेक शब्द हमें आस्ट्रिकों से मिले हैं। आस्ट्रिकों के बाद मंगोल जाति के लोग भारत आए। यह जाति याङ्सी–क्यांग (चीन–तिब्बत) नदी के मुहाने में रहती थी। इनकी प्रमुख भाषाएँ लुसाई, भोटिया, सेमा, गारो, बोडो, कुकी, लेप्चा तथा मणिपुरी आदि हैं। भारत में आने वाली चौथी जाति द्रविड़ों की है। इनका मूल स्थल अफ्रीका बताया गया है। तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम इनकी प्रमुख भाषाएँ हैं। जिनका प्रभाव क्षेत्र दक्षिण भारत है। हिंदू धर्म को शिव, पार्वती, देवी, हनुमान, कार्तिकेय, गरुड़, मृत्यु के बाद पिंडदान संस्कार आदि द्रविड़ों की देन है। भाषा के क्षेत्र में आर्यभाषाओं पर द्रविड़ों का बहुत प्रभाव पड़ा। द्रविड़ भाषाओं से आर्यभाषाओं में बहुत से शब्द आए। जैसे–अणु, कला, गण, पुष्प, बीज, रात्रि, सायं, तण्डुल, शव, झंडी, झगड़ा, खूँटा आदि।

भारत में आने वाली पाँचवीं जाति आर्यों की है। सप्त सिंधु प्रदेश को इनका मूल स्थान बताया जाता है। जहाँ से वे पूरब दिशा की ओर बढ़े थे। हिंदी, पंजाबी, मराठी, गुजराती, बांग्ला, उड़िया, असमी आदि आर्य परिवार की भाषाएँ हैं। आर्यों से पहले और उनके बाद जितनी भी जातियाँ भारत में आईं सब आपस में मिल गई जिसके फलस्वरूप एक मिली–जुली संस्कृति का विकास हुआ। आर्यों के बाद भारत में यूनानी, शक, कुषाण, हूण, मुसलमान और यूरोपवासियों का आगमन हुआ। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है कि इस देश में बाहर से जो लोग आते रहे वे यहाँ के समुदाय में विलीन होते गए। आज कोई भी भारतीय यह नहीं बता सकता कि उसके पूर्वज आर्य थे या हूण। इन्हीं जातियों से भारत की मिली–जुली संस्कृति का निर्माण हुआ है। इस बारे में 'फ़िराक़ गोरखपुरी' ने एक जगह लिखा है :

"सर ज़मीने हिंद पर अक़्वामे आलम के फ़िराक़
काफिले आते गए हिंदोस्तां बनता गया।"[3]

सर्वप्रथम जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने इस देश में भाषाओं और बोलियों का 'सर्वे ऑफ इंडिया' में प्रकाशित हैं। उस समय इस सर्वेक्षण में भारत, अफगानिस्तान, एक वैज्ञानिक सर्वेक्षण किया। इस सर्वेक्षण के परिणाम उनकी पुस्तक लिंग्विस्टिक पाकिस्तान, बंगलादेश, म्यांमार और श्रीलंका को शामिल किया गया था। इस सर्वेक्षण के अनुसार भारतीय उपमहाद्वीप में उस समय 179 भाषाएँ और 544 बोलियाँ थीं। ग्रियर्सन ने अपने ग्रंथ 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया', वाल्यूम–1, भाग–1, (पृष्ठ 1) में आधुनिक भारतीय भाषाओं के उद्भव के बारे में अमीर खुसरो (सन् 1253–1325) के विचारों का भी इस प्रकार जिक्र किया है–

"मेरा जन्म भारत में ही हुआ है, इसलिए यहाँ की भाषाओं के संबंध में मुझे दो शब्द कहने का अधिकार होना चाहिए। इस समय हर प्रांत की अलग भाषा है, जो इसकी अपनी है, कहीं से ग्रहण की हुई नहीं है। सिंधी (अर्थात सिंघ की), धुर समुंदर (मैसूर की कन्नरी), तिलंग (तेलुगू), गुजरात, मालाबार, बंगाल, अवध (पूर्वी हिंदी), दिल्ली और इसके आस–पास की (अर्थात पश्चिमी हिंदी) सभी हिंदी की भाषाएँ हैं। जो प्राचीन काल से सामान्य जीवन में हर तरह से व्यवहृत हुई हैं।"[4]

इन बातों से पता चलता है कि ग्रियर्सन से भी बहुत पहले अमीर खुसरो ने इस देश में भाषाओं का सर्वेक्षण किया था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद प्रत्येक 10 वर्ष में राष्ट्रीय जनगणना करवाई जाती है। इस जनगणना में नागरिकों द्वारा बोली जाने वाली मातृभाषाओं के आँकड़े भी एकत्र किए जाते हैं। वर्ष 1991 की जनगणना के आधार पर भारतीय भाषाओं के आँकड़े उपलब्ध हैं। जिसके 'अनुसार इस समय भारत में 114 भाषाएँ और 216 उप–बोलियाँ बोली जाती हैं। भाषाविदों द्वारा इन भाषाओं को चार भाषा परिवारों में बाँटा गया है: (1) भारतीय आर्य परिवार की भाषाएँ, (2) द्रविड़ परिवार की भाषाएँ, (3) आस्ट्रो–एशियाई परिवार की भाषाएँ, और (4) तिब्बती–बर्मी परिवार की भाषाएँ।

सहायक ग्रंथ सूची

1. भाषा और संस्कृति – भोलानाथ तिवारी
2. संस्कृति समस्या और संभावना – गोविंद चातक
3. भारत की सांस्कृतिक कहानी – रामधारी सिंह दिनकर
4. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया – ग्रियर्सन
5. सामाजिक परिवर्तन में संस्कृति और प्रशासन की भूमिका – वाल्मीकि प्रसाद सिंह
6. लैंगुएज : इंडिया एण्ड स्टेट्स – आर.जी.आई.